RNI NO. : MPHIN33094

वर्ष-11वां अंक 44

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

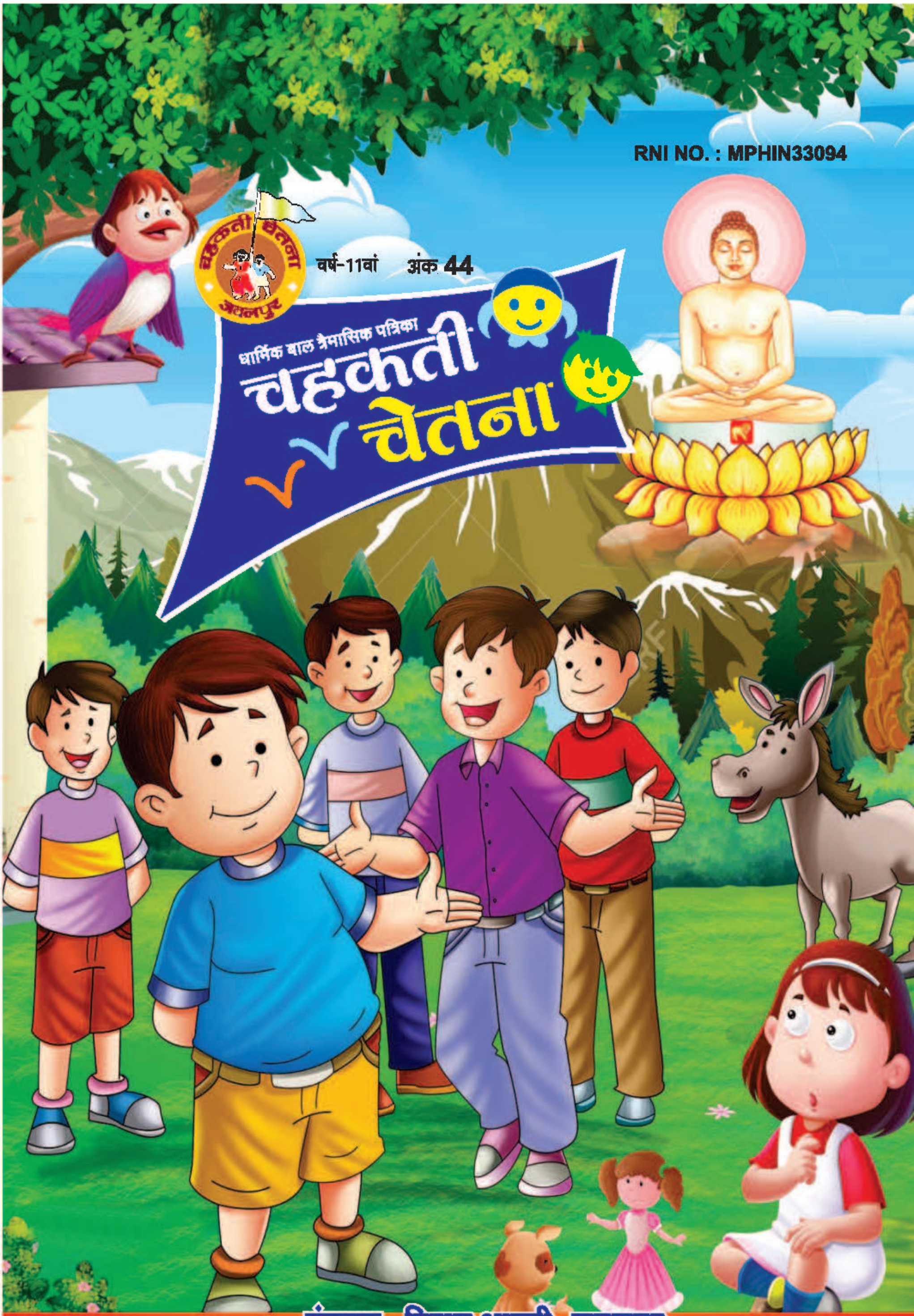

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

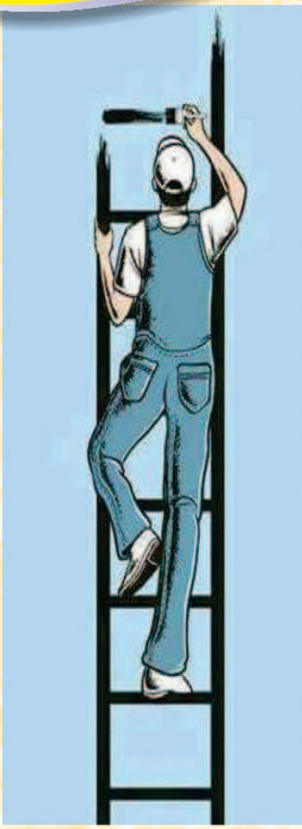

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehakti chetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	साधना	3
4.	वैराग्य	4
5.	कविता - शांत बंदर/ पर्वत और पहाड़	5
6.	मस्जिदों में जैन धर्म	6-7
7.	सोच (पुत्र का पिता को पत्र)	8-9
8.	अमर जैन शहीद -हुकुमचंद जैन	10
9.	ऐतिहासिक महापुरुष	11
10.	शरीर और आत्मा	12
11.	सोच/झूठा भोजन	13
12.	इंतजार/वजन	14
13.	तीर्थक्षेत्र	15
14.	दीपावली पोस्टर	16-17
15.	पहेली	18
16.	काश ! धन नहीं संस्कार दिये होते	19-20
17.	सन्मति वन	21-24
18.	सोच (पटाखे)	25
19.	भाव/चिंता	26
20.	रोग और दवा	27
21.	आपके प्रश्न आगम के उत्तर	28
22.	चहकती चेतना के सदस्य	29
23.	समाचार	30
24.	आश्चर्य किंतु सत्य	31
25.	परिणामों का फल	32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

अपने बच्चों को समय दें

आजकल के व्यस्त वातावरण में और आधुनिक संसाधनों के दौर में आज व्यक्ति को अपने लिये समय निकालना मुश्किल लग रहा है। अभिभावक बच्चों के अच्छे भविष्य की चिन्ता के साथ घर में सुख-सुविधाओं के संसाधन जुटाने के प्रयास करते रहते हैं आने वाले अच्छे कल के लिये। लेकिन सिद्धान्त यह है कि जिनका वर्तमान अच्छा है उनका भविष्य अच्छा होगा। इस दौड़-भाग में हम अपने बच्चों को समय देना भूल जाते हैं।

एक व्यक्ति का बहुत बड़ा व्यापार था। व्यापार के कारण उसे अधिकांश समय घर के बाहर रहना पड़ता था। जब भी बाहर से आता तो अपने बेटे के लिये गिफ्ट अवश्य लेकर आता। एक बार हमेशा की तरह जब पिता बाहर जा रहा था तो अपने बेटे से मिलने गया तो बेटा बहुत जोर-जोर से रोने लगा। यह देखकर पिता अपने बेटे के सिर पर हाथ रखकर बोला - बेटा! दुःखी मत हो मैं जल्दी वापस आ जाऊँगा और वहाँ से तुम्हारे लिये बढ़िया सा गिफ्ट लाऊँगा। बेटा बोला - मुझे नहीं चाहिये कोई गिफ्ट। मुझे बस आप चाहिये। पिता ने समझाते हुये कहा - बेटा! इतना बड़ा व्यापार, इतनी भाग-दौड़ तुम्हारे लिये ही कर रहा हूँ। बेटे ने मासूमियत से कहा - पापा! मुझे कुछ नहीं चाहिये, मुझे तो बस आप और आपका समय चाहिये। हर बच्चा यही चाहता है ।

आज संस्कारों के अभाव में बच्चे न चाहते हुये भी गलत दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। वे अपनी अनेक बातें अपने माता-पिता से छिपाते हैं। परीक्षा में नम्बर कम आने पर आत्महत्या, ब्लू व्हेल जैसे गेम के कारण स्वयं का जीवन समाप्त करना, छोटी-छोटी सी बातों पर किसी को मारना, जिद करना, मोबाइल पर गेम की लत जैसे अनेक समस्यायें सामने आ रहीं हैं। इसका एक मात्र कारण है कि सही उम्र में बच्चों को धार्मिक और नैतिक संस्कारों को न देना। हर माता अपने बच्चे को अच्छे पद पर या अच्छा व्यापारी देखना चाहता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। लेकिन संसार में जन्मा हर व्यक्ति सफल कैसे हो सकता है ? यह सब तो अपने कर्म के उदय के अनुसार होगा। इससे अधिक महत्वपूर्ण है कि वह जीवन की परिस्थितियों का सामना किस तरह से करता है हम लौकिक मूल्यों के साथ बच्चों को जीवन मूल्य भी सिखायें। उन्हें यह बतायें कि यह जीवन कितना महत्वपूर्ण है, यह मनुष्य भव कितना दुर्लभ है। यह लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिये नहीं बल्कि जीवन को महान बनाने के लिये प्राप्त हुआ है।

इसके लिये आवश्यक है कि हम बच्चों को समय दें। आज हमारे पास मोबाइल के व्हाट्सएप, फेसबुक के लिये तो समय है परन्तु बच्चों के लिये समय नहीं। अभिभावक भी बच्चों की जिद से बचने के लिये मोबाइल देकर अपने कर्तव्य पूरे कर लेते हैं। जब माँ अपने कुछ माह के बच्चे को दूध पिलाने के लिये धार्मिक गीत सुनाने की बजाय मोबाइल पर कार्टून दिखाती है तो दूध के साथ कैसे संस्कार बच्चों में प्रवेश करेंगे, आप स्वयं समझ सकते हैं।

बच्चों को दिये गये संस्कार स्वयं के भविष्य की सुरक्षा और मंगल समाधि की आधारशिला हैं।

- विराग शास्त्री

साधना

पाँचों पाण्डव भगवान नेमिनाथ के समवशरण में गये और उनके द्वारा अपने पूर्व भवों का वर्णन सुनकर बहुत प्रसन्न हुये। भगवान की मंगल वाणी सुनकर पाण्डवों को संसार से वैराग्य आ गया और उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्रों को सौंपा और वे सभी मुनि दीक्षा लेने के लिये तैयार हो गये। पाण्डवों ने सभी वस्त्र-आभूषण त्यागकर केश लोंच कर दिगम्बर दीक्षा अंगीकार की। पाण्डवों के साथ कुन्ती, सुभद्रा, माद्री और द्रोपदी ने भी आर्यिका राजमती के पास जाकर आर्यिका व्रत अंगीकार किये। सभी उग्र तप में लीन हो गये।

पाण्डवों ने अपनी संकल्प शक्ति के बल पर पाँच महाव्रत आदि २८ मूलगुणों का निर्दोष पालन किया और आत्म में निरन्तर लीन रहने का प्रयास करते रहे। अनेक उपसर्गों को सहन करते हुये वे अनेक वर्षों तक विहार करते रहे। वे विहार करते हुये भगवान नेमिनाथ के दर्शन करने शत्रुंजय पर्वत पहुँचे और वहीं पर ध्यान में बैठ गये।

एक दिन वहाँ दुर्योधन का भांजा कुर्मुधुर आया। अपने नाम के अनुसार वह बहुत क्रूर था और जब उसने पाण्डवों को देखा तो उसने पाँचों पाण्डवों को मार डालने का निश्चय किया। उसने सोचा कि ये पाण्डव मेरे मामा दुर्योधन को मारकर यहाँ आ गये हैं। अभी समय अच्छा है। अभी ये ध्यान में लीन हैं। अभी ये युद्ध भी नहीं कर सकते। बदला लेने का यही समय है।

ऐसा सोचकर उसने लोहे के आभूषण लेकर उन्हें अग्नि में बहुत गरम किया। जैसे ही लोहे का आभूषण अग्नि में लाल हो गये तब उन्हें लाकर पाण्डवों मुनिराजों के गले में डाल दिया। पाण्डवों का शरीर जलने लगा। पाँचों पाण्डव उपसर्ग जानकर अपनी आत्मा में लीन हो गये। बाहर में आग बढ़ती गई और इसी अवस्था में युधिष्ठर, भीम, अर्जुन ने एक साथ केवलज्ञान और निर्वाण पद की प्राप्ति हुई। नकुल और सहदेव के मन में अपने भाई की साधर्मी के रुप में चिन्ता हुई। बस इसी राग के कारण वे दोनों उपसर्ग को समता से सहन करते हुये सर्वार्द्धसिद्धि गये और अहमिन्द्र पद प्राप्त किया। यहाँ की आयु पूरी करने बाद वे पुनः मनुष्य होंगे और मुनि दशा अंगीकार मोक्ष पद प्राप्त करेंगे।

वैराग्य

अठारहवें तीर्थंकर अरहनाथ के एक हजार करोड़ वर्ष बीत जाने के बाद भगवान मल्लिनाथ हुये थे। मल्लिकुमार जब बचपन की अवस्था को व्यतीत कर युवा हुये तो बहुत सुन्दर लगने लगे थे। उनकी सुन्दर मुद्रा देखकर हर कोई उन्हें देखता ही रह जाता था। उनकी आयु पचपन हजार वर्ष थी, उनका शरीर का रंग सुनहरा था। जब मल्लिकुमार 100 वर्ष के हो गये तब उनके पिता कुम्भ ने उनका विवाह एक सुन्दर राजकन्या से निश्चित कर दिया। इस शाही विवाह के लिये तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी गईं। पूरी मिथिलापुरी को सजाया गया, भवनों पर ध्वज लहराये गये और जगह-जगह संगीत आदि के आयोजन होने लगे।

एक ओर सारा परिवार और नगर के निवासी उनके विवाह उत्सव की तैयारी में लगे थे वहीं दूसरी ओर मल्लिकुमार एकान्त में नगर की सजावट देखकर विचार कर रहे थे। नगर की शोभा के आधार से अपने पूर्व भव के ज्ञान से विचार कर रहे थे कि विवाह एक मीठा बन्धन है, मैं अपना जीवन क्यों इसमें बरबाद करूँ? विवाह मेरे आत्मकल्याण के मार्ग में बाधायें ही उत्पन्न करेगा। मैं तो आत्मा के आनन्द का पुरुषार्थ करूँगा।

उनके वैराग्य परिणाम जानकर स्वर्ग से लौकान्तिक देवों ने आकर उनके वैराग्य की अनुमोदना की। सौधर्म आदि देवों ने आकर उनका दीक्षा कल्याणक मनाना प्रारम्भ कर दिया। जिस कन्या से मल्लिकुमार का विवाह होना था वे मल्लिकुमार का वैराग्य जानकर बहुत दुःखी हुये, पर उपाय भी कुछ नहीं था। विवाह की तैयारियाँ बन्द कर दीं गईं। संगीत नृत्य के स्थान पर शान्त रस और वैराग्य के गीत गाये जाने लगे। चारों ओर शान्ति का वातावरण हो गया। दीक्षा अभिषेक के बाद मल्लिकुमार जयन्त नाम की पालकी में बैठकर वन पहुँचे और दिगम्बर मुनि दीक्षा अंगीकार की, उनके साथ तीन सौ राजाओं ने दीक्षा ली। दीक्षा लेने के मात्र 6 दिन बाद ही मल्लिकुमार को केवलज्ञान हो गया। कुबेर ने दिव्यध्वनि के लिये भव्य समवशरण की रचना की। उनके समवशरण में 28 गणधर, 29000 उपाध्याय, 2200 केवलज्ञानी, 2900 विक्रिया धारी मुनिराज, 1750 मनःपर्यय ज्ञानी जीव थे।

मल्लिनाथ स्वामी ने अनेक आर्य क्षेत्रों में विहार किया और भव्य जीवों को मुक्ति का मार्ग बताया। आयु पूर्ण होने के 1 माह पूर्व सम्मेदशिखर पहुँचे और 5000 मुनिराजों के साथ योग निरोध धारण किया और निर्वाण पद की प्राप्ति की। इसी समय देवों ने आकर निर्वाण महोत्सव मनाया।

शांत बंदर

शांत आज क्यों बैठे बन्दर।
नटखट थे शैतान तुम बन्दर।।
बिल्ली मौसी पूछे उससे,
कारण तो बतला दो।
इतने चंचल थे भैया तुम,
हुये शांत क्यों समझा दो।।
बंदर बोला उछलकूद में,
समय गया यह सारा।
श्री जिनवर ने आज बताया,
आतम सबसे प्यारा।।

पर्वत और पहाड़

कितने अच्छे सुन्दर लगते, पर्वत और पहाड़ ।
ऊँचे-नीचे छोटे-मोटे, सुन्दर लगते झाड़ ।।
पर्वत और पहाड़ों की है, दुनिया अजब निराली ।
जहाँ बिछी रहती है हरदम, हरियाली हरियाली ।।
ये सारे इक इन्द्रिय जीव हैं, जिनवाणी में आया।
आत्मा की विराधना करने, का फल इनने पाया।।
सम्यग्दर्शन पाकर हमको, जिनवाणी उर धरना।
प्रभु आज्ञा का पालन करके, खोटी गति से बचना।।

रचनाकार - विराग शास्त्री

मस्जिदों में जैन धर्म के अवशेष

जैन धर्म की संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन है। हम समय-समय पर आपको जैनत्व के गौरव से परिचय कराते रहते हैं। भारत में अनेक प्राचीन जैन मंदिरों को तोड़कर या परिवर्तन कर उन्हें हिन्दू मंदिरों और मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया गया। दिल्ली की प्रसिद्ध कुतुबमीनार, दौलताबाद किला, अजमेर में ढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद, भोजशाला की मस्जिद, सीता की रसोई मस्जिद, मीनाक्षी मंदिर, तिरुपति बालाजी का मंदिर, पंढरपुर का विख्यात मंदिर आदि इसके प्रमाण हैं।

अभी विगत 15 सितम्बर को जापान के प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे अहमदाबाद में बुलेट ट्रेन का शिलान्यास करने भारत आये । श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वागत करते हुये उन्हें अहमदाबाद के प्रमुख स्थानों में ले जाकर भारत की संस्कृति का परिचय कराया। इन स्थानों में वे अहमबदाबाद की सैयद मस्जिद भी गये। इसी सैयद मस्जिद के पास स्थित जामा मस्जिद है। यह मस्जिद संभवतः प्राचीन जैन मंदिर के स्वरूप बदलकर या जैन मंदिरों की सामग्री का उपयोग कर बनाई गई है। इसके उत्कृष्ट कलायुक्त पिलर्स, गुम्बद जैन संस्कृति का परिचय देते हैं।

1879 में पुरातत्व विभाग के एन.बी.बेट्स द्वारा संकलित एवं जेम्स कैम्पवेल द्वारा प्रकाशित बॉम्बे गजट के पेज नं. 217 पर लिखा है कि अहमदाबाद की जामा मस्जिद के मुख्य द्वार में फर्श पर काले पाषाण की भगवान पाश र्वनाथ की प्रतिमा का हिस्सा या कमर के नीचे का हिस्सा स्थापित है। भगवान पार्श्वनाथ के चिन्ह सर्प से यह बात सिद्ध होती है। इसी बात का उल्लेख आर्कियोलॉजिकल ऑफ वेस्टर्न इण्डिया में भी किया गया है।

जामा मस्जिद के निर्माण में उपयोग की गई सामग्री में देलवाड़ा, रणकपुर और पालीताना की छटा मिलती है।

पूर्व में जैनों के राजनगर के नाम से प्रसिद्ध अहमदाबाद का पूर्व नाम कर्णावती या श्रीनगर था। इसकी स्थापना गुजरात के सोलंकी राजा करनादेवा ने संभवतः 1073 में की थी। बाद में मुस्लिम शासक अहमद शाह ने इस नगर का जीर्णोद्धार कराया और 4 मार्च सन् 1411 को इसका नाम अहमदाबाद कर दिया। जामा मस्जिद के एक दीवाल पर इसका उल्लेख है।

अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन के पास सरसपुर में लगभग 1638 में शान्तिदासजी जैन द्वारा चिन्तामन के नाम से प्रसिद्ध जैन मंदिर का निर्माण कराया गया। सन् 1644-1676 के दंगों में मुगल शासक औरंगजेब ने मंदिर में एक गाय का गला काटकर इसे अपवित्र कर दिया और जैन प्रतिमाओं को तोड़कर मस्जिद में परिवर्तित कर दिया। जैन समाज द्वारा दिल्ली में शासक शाहजहाँ से शिकायत की और शाहजहाँ ने पूर्व की भांति मंदिर स्थापित करने के आदेश दिये।शान्तिदासजी ने मूल प्रतिमा को जव्हेरीवाडा में स्थानांतरित कर दिया था। इस घटना का विवरण बॉम्बे गजट के पेज नं. 285 पर प्रकाशित किया गया है।

अहमबाद की फतेह मस्जिद और रानी मस्जिद में भी जैन मंदिरों की सामग्री का उपयोग किया गया था।

जामा मस्जिद के गाइड द्वारा मस्जिद की जानकारी देते हुये यह बताया जाता है कि इस मस्जिद में इस्लामिक वास्तुकला नहीं बल्कि जैन वास्तुकला है। जैन वास्तुकला में प्रकृति, जानवर, मनुष्य आदि की आकृति बनाई जातीं हैं जबकि इस्लामिक वास्तुकला में इनका उपयोग वर्जित है।

इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिये आप इस लिंक का प्रयोग कर सकते हैं। https://youtube.be/puup6YzUESw

- साभारः विश्व जैन संगठन

जन्म दिवस की मंगल शुभकामनायें -

अंजना सा धैर्य रख, हो सीता सा काम।
सौम्या समय आत्मा को जान लो, बनो सिद्ध भगवान।।

- **सौम्या सुनील जैन**, मुम्बई 29 दिसम्बर 2017

सोच

पुत्र का पत्र पिता के नाम

बुजुर्ग माँ-बाप का इकलौता बेटा अमेरिका में जॉब करता है। माँ-बाप वृद्ध होने के कारण बीमार रहते हैं और हमेशा अकेलापन महसूस करते हैं। बहू और पोता भी अमेरिका में बेटे के साथ ही रहते हैं। घर की सभी समस्याओं को देखकर पिता ने अपने बेटे को एक पत्र लिखा। इस पत्र के जबाब में पुत्र ने भी एक पत्र लिखा।

आपके आशीर्वाद से

आपकी भावनाओं/ इच्छाओं के अनुरूप मैं अमेरिका में व्यस्त हूँ। यहाँ धन/बंगला आदि सभी सुविधायें हैं। बस समय नहीं है।

मैं आपसे मिलना चाहता हूँ, आपके पास बैठकर आपसे बातें करना चाहता हूँ,

आपके दुःख दर्द कुछ कम करना चाहता हूँ परन्तु क्षेत्र की दूरी बच्चों के अध्ययन की मजबूरी, ऑफिस काम करने की मजबूरी...

क्या करूँ ? कैसे कहूँ ?

मैं आपको रुपये तो भेजता हूँ पर चाहकर भी स्वर्ग जैसी जन्मभूमि और अपने माँ-बाप के पास नहीं आ सकता।

पिताजी ! मेरे पास अनेक सन्देश आते हैं

कि "माता-पिता सब कुछ बेचकर भी बच्चों को पढ़ाते हैं

और बच्चे सबको छोड़कर विदेश जाकर बस जाते हैं,

बेटे माँ बाप के किसी काम नहीं आते हैं ।"

पर पिताजी! मैं कहाँ जानता था कि
इंजीनियरिंग क्या होती है, मुझे कहाँ पता था कि अमेरिका कहाँ है
मेरा कॉलेज, पैसा और अमेरिका तो बस आपकी गोद ही थी न
आपने मंदिर को मुख्य न करके स्कूल पहले जाने को कहा,
पाठशाला नहीं कोचिंग भेजा

आपने अपने मन में दबी इच्छाओं को पूरा करने के लिये मुझे रुपये की जीवन में जरुरत समझाई, इंजीनियरिंग और पद प्रतिष्ठा को ध्येय बनाने की शिक्षा दी

माँ ने भी दूध पिलाते हुये

'मेरा राजा बेटा बड़ा आदमी बनेगा, गाड़ी बंगला होगा, हवा में उड़ेगा' कहा था। मेरी लौकिक की उन्नति के लिये हमेशा कामना की।

मेरे पूज्य पिताजी!

मैं बस आपसे इतना पूछना चाहता हूँ कि
मैं आपकी सेवा नहीं कर पा रहा,
मैं बीमारी में दवा देने नहीं आ पा रहा,
मैं हजारों किलोमीटर दूर बंगले और आप गांव के उसी पुराने मकान में
क्या इसका सारा दोष सिर्फ मेरा ही है...........

- आपका पुत्र

प्रत्येक माँ-बाप यह सोचें की दुनिया की हर समस्या सहकर हम अपनी संतान को सुख-सुविधा देना चाहते हैं, उन्हें ऊंचे पद पर देखना चाहते हैं। परन्तु जिनधर्म के संस्कार न देकर उनके भविष्य निर्माण में आप अपना भविष्य तो खराब नहीं कर रहे ...

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र का पुनः शुभारम्भ जनवरी 2018 से

जीर्ण-शीर्ण साहित्य एवं पुरानी पत्र-पत्रिकाओं के लिये श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारला, मुम्बई द्वारा जबलपुर में जिनवाणी संरक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है। प्रतिवर्ष की भांति का इसका पुनः शुभारम्भ 1 जनवरी 2018 से किया जा रहा है। यह केन्द्र 15 मार्च 2018 तक संचालित होगा। अतः जिन मंदिरों अथवा व्यक्तियों को जीर्ण-शीर्ण साहित्य और पुरानी पत्र-पत्रिकायें भेजना हो वे इस अवधि के दौरान भेज सकते है। 15 मार्च 2018 के बाद यह केन्द्र पुनः अगले सत्र के लिये बन्द कर दिया जायेगा। विशेष ध्यान रहे कि इस केन्द्र पर जीर्ण-शीर्ण साहित्य और पुरानी पत्र-पत्रिकायें और सीडी ही स्वीकार किये जायेंगे। सामग्री भेजने के पहले संपर्क अवश्य करें। **हमारा पता : जिनवाणी संरक्षण केन्द्र, विराग शास्त्री, 316, मिश्रबन्धु कार्यालय के सामने, मेन रोड, दीक्षितपुरा, जबलपुर 482002 म.प्र. मो.9300642434**

हमारे महापुरुष -

अमर जैन शहीद लाला
हुकमचंद जैन कानूनगो

भारतीय इतिहास में 1857 की क्रांति का महत्वपूर्ण योगदान है। कहा जाता है कि इसी क्रांति से भारत की अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के प्रयासों का शुभारम्भ हुआ। इस क्रांति में अपने प्राण अर्पित करने वाले लाला हुकमचन्दजी का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा। लाला हुकमचन्दजी ने अपनी शिक्षा और प्रतिभा के बल पर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त कर लिया। सन् 1841 में मुगल बादशाह ने लालाजी को झांसी और करनाल जिले का कानूनगो और प्रबन्धकर्ता नियुक्त किया। इस बीच अंग्रेजों ने हरियाणा को अपने आधीन कर लिया। सन् 1857 में जब स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा तो लालाजी को अंग्रेजों के विरुद्ध कुछ करने का विचार किया और उन्होंने दिल्ली आकर बादशाह जफर से भेंट की और एक देशभक्त सम्मेलन में शामिल हुये, इस सम्मेलन में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे से जैसे देशभक्त शामिल थे।

जब अंग्रेजों की सेना झांसी होकर दिल्ली पर हमला करने जा रही थी तब उस सेना पर लाला हुकमचन्दजी ने हमला कर उसे रोकने का प्रयास किया। लालाजी ने बादशाह ज़फर को एक पत्र लिखकर सेना की सहायता मांगी, पर उस पत्र का कोई उत्तर नहीं आया और इसी बीच अंग्रेजों ने बादशाह जफर को पकड़कर रंगून (म्यामार) जेल में डाल दिया। जब अंग्रेज अधिकारी ने बादशाह की फाइलों को देखा तो उसमें लालाजी का लिखा हुआ पत्र उन्हें मिल गया और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध पत्र लिखने वाले लालाजी के खिलाफ कड़ी कार्यवाही का आदेश दिया। लालाजी के घर पर छापा मारकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

18 जनवरी 1858 को उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई और लालाजी के मकान में ही उन्हें फांसी दे दी गई। अंग्रेजों ने अत्याचार करते हुये डर पैदा करने के लिये लालाजी का शव़ उनके सम्बन्धियों को न देकर दफना दिया और लालाजी के 13 साल के भतीजे फकीरचन्द जैन को पकड़कर वहीं फांसी पर चढ़ा दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लाला हुकमचन्दजी याद में झांसी में उनके नाम पर पार्क बनाया गया और उनकी प्रतिमा विराजमान की गई।

ऐतिहासिक महापुरुष-

पंडित प्रभुदासजी

जैन कुल में जन्में अनेकों महापुरुषों ने जिनधर्म की प्रभावना में अपना अतुलनीय योगदान दिया है। इनमें से एक थे पण्डित प्रभुदास।

बिहार प्रान्त के आरा शहर के निवासी बाबू प्रभुदास बहुत धार्मिक, संस्कृत के जानकार, शास्त्र स्वाध्यायी, चरित्रवान, दानी और उदार व्यक्ति थे। अपनी विद्वता के कारण वे बाबू प्रभूदास से पण्डित प्रभुदास कहलाने लगे थे। इन्होनें 1856 में वाराणसी में गंगा नदी के भदैनी घाट पर भगवान सुपार्श्वनाथ का मन्दिर और धर्मशाला बनवाई थी और उसी समय भगवान चन्द्रप्रभ की जन्मभूमि चन्द्रपुरी में भी गंगा तट पर जिनमंदिर बनवाया था। छहढ़ाला ग्रन्थ के रचनाकार पण्डित दौलतराम जी के सम्पर्क में आये। प्रभुदासजी पण्डित दौलतरामजी का बहुत आदर करते थे। प्रभुदासजी की आचरण इतना उत्कृष्ट था कि वे 40 वर्ष तक एक समय ही भोजन करते रहे। इनका 64 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया।

इनके एकमात्र पुत्र बाबू चन्द्रकुमार थे जिन्होंने कौशाम्बी में जिनमंदिर बनवाया। दुःखद बात यह है कि इतने उदारमना श्रेष्ठी चन्द्रकुमारजी का मात्र 31 वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवास हो गया।

राय बद्रीदास

मूलतः लखनऊ के रहने वाले श्रीमाल वंश के राय बद्रीदास प्रसिद्ध जौहरी थे। अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव के कारण 1853 में वे सपरिवार लखनऊ छोड़कर कोलकाता चले गये और बहुत कम समय में अपनी ईमानदारी, व्यवसाय कला के दम पर वे कोलकाता के प्रमुख जौहरी बन गये। सन् 1871 में कोलकाता के वायसराय लार्ड मेयो ने इन्हें विशिष्ट पद दिया और रायबहादुर की उपाधि से सन्मानित किया। इनका परिवार बहुत धार्मिक था। कोलकाता के जैन मंदिर के पास एक बड़ा तालाब था जिसमें लोग मछलियों का शिकार किया करते थे। यह देखकर श्रावकों को बहुत पीड़ा होती थी। एक दिन इनकी धर्मप्रेमी माँ ने कहा कि यह जीव हिंसा बन्द होनी चाहिये। माँ की भावना जानकर इन्होंने वह तालाब मंहगे मूल्य में खरीद लिया और मछलियों का शिकार बन्द करा दिया। इतना ही नहीं बद्रीदासजी ने उस तालाब को भरवाकर वहाँ बहुत सुन्दर उद्यान (Park) बनवाया और एक जिनमंदिर भी बनवाया।

बद्रीदासजी ने बहुत दूर-दूर तक धार्मिक यात्रायें कीं। आगरा में एक स्थान पर खुदाई करने एक भगवान शीतलनाथ की प्रतिमा प्राप्त हुई। सेठजी अत्यंत उत्साह से वह प्रतिमा कोलकाता ले आये, फिर धूमधाम से प्रतिमा की जिनमंदिर में प्रतिष्ठा करवाई। सम्मेदशिखरजी में एक अंग्रेज द्वारा सुअर काटने का कत्लखाना खोला गया था जिसे बद्रीदासजी ने अपने प्रभाव से बन्द करवा दिया। सेठजी आज भी अपने कार्यों से अमर हैं।

शरीर और आत्मा का वार्तालाप

सुबह के 4 बजे

आत्मा - चलो! आत्मा की साधना का समय हो गया है.. उठो, उठो ना, उठो ना..

शरीर - सोने दो न... ! अभी क्यों तंग कर रही हो, रात को बहुत देर से सोया था। थोड़ी देर बाद उठकर साधना करूँगा।

आत्मा - ठीक है और थोड़ी देर बाद ही सही।

सुबह 6 बजे

आत्मा - अब तो उठ जाओ भाई! सूरज भी अपनी किरणें फैलाता हुआ हमें जगा रहा है उठो ना।

शरीर - कितना परेशान करती हो... ठीक है, उठ रहा हूँ , बस 5 मिनिट और...

थोड़ी देर बाद शरीर उठा और जिनमंदिर गया और 10 मिनिट बाद ही वापस आने लगा. तब **आत्मा बोली** - अरे अरे..! क्या हुआ ? इतनी जल्दी मंदिर से वापस जा रहे हो, अभी तो मुझे शांति मिलना शुरु हुई और तुम उठ गये..

शरीर - अरे..! मुझे घर का और ऑफिस का कितना काम है तुम्हारी समझ में तो कुछ नहीं आता और अभी नाश्ता भी करना है।

आत्मा - ठीक है तो शाम को साधना तो करोगे ना..

शरीर - (परेशान होते हुये) हाँ भाई! हाँ जरूर करूँगा।

सारा दिन निकल गया। आतमा दिन भर के काम, राग-द्वेष के परिणामों से आकुलित हुई और शाम को शरीर से बोली - अरे! शाम हो गई, अब तो फ्री हो गये होगे। अब तो चलो साधना के लिये..।

शरीर - (चिल्लाते हुये) क्यों सारा दिन तंग करती रहती हो...देखती नहीं अभी ऑफिस में दिन भर काम करके आया हूँ, बहुत थक गया हूँ।

आत्मा - अरे! फिर तो बहुत अच्छी बात है, यदि तुम थके हुये हो तो एक बार आत्मा की साधना करोगे तो थकान तुरन्त दूर हो जायेगी।

शरीर - अभी नहीं। अभी थोड़ा टीवी देख लूँ। रात को पक्का बैठूँगा ..। रात को थकान से शरीर की आंखें बन्द हो रहीं हैं। मुश्किल से शरीर स्थिर होकर बैठा और नींद आने लगी। शरीर उठा और सोने के लिये जाने लगा तो आत्मा बोल उठी - अरे अरे ! क्या हुआ ? अभी-अभी तो बैठे थे, अचानक उठकर कहाँ जाने लगे?

शरीर - मैं बहुत थक गया हूँ, कल सुबह 4 बजे आत्म साधना के लिये जरूर बैठूँगा। आत्मा चुप हो गई तभी शरीर ने मोबाइल पर अपने एक मित्र का मेसेज देखा और सोचा अरे वाह! ये तो मेरे दोस्त का मेसेज है। थोड़ी देर चैटिंग कर लूँ फिर सो जाऊँगा और वह चैटिंग करने लगा।

आत्मा - देखो! चैटिंग करने के लिये नींद भाग गई और साधना के नाम पर इसे नींद आ रही थी और जिस आत्मा के कारण यह जीवन जी रहा है उसके नाम पर नींद आने लगती है। चलो...! कल देखते हैं।

दूसरे दिन वही दिनचर्या और जीवन समाप्त।

सोच

एक डॉक्टर कुछ काम कर रहा था। उसका बेटा उसे बार-बार परेशान कर रहा था। पिता ने उससे बचने के लिये संसार का एक नक्शा (Map) उसे टुकड़े-टुकड़े करके दिया और कहा - इसे वापस पहले जैसा जोड़ो। डॉक्टर ने सोचा कि इस नक्शे को जोड़ने में बहुत टाइम लगेगा, तब तक वह अपना काम शांति से पूरा कर लेगा। लेकिन बच्चे ने कुछ ही मिनिट में नक्शा ज्यों का त्यों जोड़ दिया।

डॉक्टर पिता ने आश्चर्य से पूछा - बेटा! इतनी जल्दी नक्शा कैसे जोड़ लिया? बेटे ने उत्तर दिया - पापा ! नक्शे के पीछे एक आदमी का फोटो था, मैंने उल्टा रखकर आदमी को जोड़ा। सोचा कि यदि आदमी ठीक हो जायेगा तो संसार अपने आप ठीक हो जायेगा। बेटे की बात साधारण होकर भी उसकी सोच बहुत गहरी थी।

झूठा भोजन

एक बालक प्रतिदिन अपने स्कूल में अपना टिफिन का पूरा भोजन अच्छी तरह से साफ करके खाता था। उसके टिफिन में एक भी दाना बाकी नहीं रहता था। उसके दोस्त कंजूस कहकर उसका मजाक उड़ाते थे लेकिन वह अपने दोस्तों का मजाक सुनकर भी अपने काम में लगा रहता था। एक दिन उसके दोस्त ने पूछ लिया - आखिर क्या बात है कि तुम अपने टिफिन में एक दाना भी नहीं छोड़ते ?

उसका उत्तर बहुत सुन्दर था। वह बोला - ये मेरे पिता का आदर है जो इतनी मेहनत से अपने कमाये रुपये से घर में अनाज खरीदकर लाते हैं।

यह मेरी माँ का सन्मान है जो सुबह जल्दी उठकर बहुत प्रेम और उत्साह से मेरे लिये टिफिन तैयार करती है। यह आदर उन किसानों का है जो खेतों में कड़ी मेहनत करके अनाज उगाते हैं।

इसलिये झूठा छोड़ने में शान नहीं बल्कि इन सबका अपमान है। यह सुनकर दोस्त बहुत शार्मिन्दा हुये और उन्होंने उससे मजाक करना बन्द कर दिया।

इंतजार

एक फकीर नदी किनारे बैठा था। किसी ने पूछा - बाबा ! यहाँ नदी किनारे बैठकर क्या कर रहे हो ?

फकीर बोला - इंतजार कर रहा हूँ, पूरी नदी का जल बह जाये तो नदी पार करुँ। उस व्यक्ति ने कहा - कैसी उल्टी बात करते हो बाबा...! पूरा जल बहने के इंतजार में तुम कभी नदी पार नहीं कर पाओगे क्योंकि नदी कभी खाली नहीं होती।

फकीर ने कहा - यही तो मैं तुम लोगों को समझाना चाहता हूँ कि तुम लोग सदा यह कहते हो कि एक बार जीवन की सब जिम्मेदारियाँ पूरी हो जायें फिर मैं धर्म करुँगा। लेकिन भाई ! इस तरह तो जीवन ही समाप्त हो जायेगा पर जिम्मेदारियाँ नहीं...।

फकीर की बात सुनकर वह युवक चुप हो गया।

वजन

एक वृद्ध महिला एक सेठ का थोड़ा सा कर्ज नहीं चुका पाई तो सेठ ने उसकी खेत पर कब्जा कर लिया। एक दिन वही महिला एक टोकनी में मिट्टी भरकर बैठी हुई थी, उसी समय सेठ वहाँ से निकला तो महिला ने सेठ से कहा - सेठजी ! मेरा यह टोकना उठवा दीजिये। सेठ ने कहा - मिट्टी से भरा टोकना बहुत वजनदार है, यह कैसे उठाया जा सकता है ? तब महिला ने कहा - जब इतना सा टोकना नहीं उठा सकते तो मरते समय मेरा खेत कैसे उठा लेकर जाओगे ?

यह सुनकर सेठ को अपनी गल्ती समझ में आ गई और उसने महिला को खेत वापस कर उससे क्षमा मांगी।

जैन तीर्थ

अतिशय क्षेत्र एवं तपोभूमि

तिरुमलै / अरिहंतगिरि

तमिलनाडु में बहुत बड़ी संख्या में दिगम्बर जैन मंदिर हैं। यहाँ के छोटे-छोटे गांवों में अति प्राचीन भव्य जिनमंदिर हैं। इनमें से एक है तिरुवण्णामलै जिले की पोलूर तहसील में स्थित तिरुमलै तीर्थ। चेन्नई से 155 किमी की दूरी पर स्थित तिरुमलै क्षेत्र को अरिहन्तगिरि या अर्हन्तसुगिरि अर्थात् अरहंतों का पर्वत भी कहा जाता है। यह चतुर्थकालीन क्षेत्र है। यहाँ पर्वत पर 5 मंदिर हैं । इसमें शिखा मणिनाथ के नाम से प्रसिद्ध श्री नेमिनाथ भगवान की 18 फुट ऊंची प्रतिमा है जो कि 1800 वर्ष प्राचीन है। पर्वत पर वरदत्त गणधर, वृषभाचार्य, आचार्य समन्तभद्र के चरण चिन्ह भी स्थापित हैं। साथ अनेक मुनि विहार गुफायें, प्राचीन कला के दर्शन भी होते हैं। 335 मीटर ऊंचे पर्वत पर जाने के लिये 140 सीढ़ियाँ हैं। आचार्य अकलंक देव ने यहाँ गुरुकुल परम्परा आरम्भ की थी। यहाँ ताड़पत्र पर लिखे गये लगभग 100 ग्रन्थ उपलब्ध हैं। दसवीं शताब्दी में पहाड़ की तलहटी में चोलवंशी राजाओं की बड़ी बहन कुन्दैवे ने जिनमंदिर बनवाया था। गुफा मंदिरों में तीर्थंकरों की प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं। एक गुफा में वादिभ सिंह की समाधि है।

इसे क्षेत्र पर आवास और भोजन की पर्याप्त सुविधायें हैं। यहाँ पर एक गुरुकुल भी संचालित है। यह क्षेत्र आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूर मलै से 47किमी, कांचीपुरम् से 50 किमी, वेल्लोर से 40 किमी की दूरी पर है। इस क्षेत्र के आसपास अनेक प्राचीन जैन तीर्थ दर्शनीय हैं। अकेले तिरुवण्णमलै जिले में ही 44 प्राचीन जैन तीर्थ क्षेत्र हैं।

तिरुमलै का सम्पर्क सूत्र -
04181-244325, 09345982671 09092600778

आप मानव हैं या दानव ? - स्वयं निर्णय करें

क्या पटाखे फोड़कर

आप अहिंसा व दया धर्म
का पालन कर पायेंगे ?

अतः जियो और जीने दो का
अमर संदेश देने वाले
भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर
हिंसा का तांडव मत करिये ।
राम, बुद्ध, नानक एवं संतों-महापुरुषों
के अहिंसा संदेश का पालन कीजिये ।
सुख शांति के पर्व दीपावली पर
अन्य जीवों के लिये यमराज न बनें ।

करोड़ों की सम्पत्ति का नुकसान

अनंत निर्दोष जीवों की हत्या

अनंत पाप का बंध

समय की बर्बादी

अरबों रुपयों की हानि

गंदगी का साम्राज्य

शारीरिक क्षति एवं जन हानि

वायु प्रदूषण की अधिकता

आँख एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर

भगवान एवं संतों की वाणी का अपमान

- : प्रकाशक :-
चहकती चेतना धार्मिक त्रैमासिक बाल पत्रिका
सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम संटर, फूटाताल, जबलपुर - ४८२ ००२ म.प्र.
मो. : 09300642434 ई-मेल - kahansandesh@gmail.com
सदस्यता राशि : 400/- तीन वर्ष हेतु 1200/- दस वर्ष हेतु
संपादक - विराग शास्त्री

यह हिंसा के यमराज का नहीं, अहिंसा के सम्राट के निर्वाण का महापर्व है ।

पहेली

1. घड़ा रखा आंगन में, उसमें नाग विकराल ।
सास बहू से यूँ कहे, बेटी हार निकाल ।।

2. जनम के जमुना पार गये ।
वन में जीवन हार गये ।।

3. दो पुत्री के पिता थे वे, इक शत इक के तात।
एक पौत्र ऐसा आया, फैला गया मिथ्यात्व ।।

4. पहला गया तो दूसरा आया, यह अनादि का चक्कर ।
सज धज कर राजा आया तो, दोनों हुये रफूचक्कर ।।

5. एक पुरुष जिनवर ने देखा, पांव पसारे खड़ा हुआ ।
कमर पर दोनों हाथ हैं उसके, काल अनन्त से अड़ा हुआ ।।

6. नव नाली जिस नगर में, बहे सदा निःसार।
गली - गली में गन्दगी सड़े गले दिन-रात।।

7. चौपाये से नहीं वे डरते, दो पाये से बचते हैं।
अपने में गुप्त रहें वे, गिरि गुफा में रहते हैं ।।

8. चार मरे चार उपजे, अधर विराजे जाय।
अमर इन्द्र चक्री नमें, चतुर्मुखी कहलाय।।

उत्तर 1. सोमा सती 2. श्री कृष्ण 3. ऋषभदेव 4. पुण्य-पाप 5. तीन लोक 6. शरीर 7. मुनिराज 8. अरहंत परमेष्ठी

काश! धन नहीं संस्कार दिये होते......

वर्तमान परिवेश में नैतिक मूल्यों की कितनी आवश्यकता है यह बात समझना बहुत आवश्यक है। दो माह पूर्व की दो घटनाओं ने एक बार फिर सोचने पर मजबूर कर दिया कि हमें अपने सोचने की दिशा बदलने की कितनी आवश्यकता है।दोनो घटनायें माया नगरी मुम्बई की हैं।

1- करोड़ों रुपये फ्लेट्स की मालकिन 80 वर्षीय श्रीमति आशा साहनी मुम्बई में अपने फ्लैट में मृत पाई गईं। उनकी मौत तो लगभग 6 माह पहले ही गई थी परन्तु किसी को उनकी मृत्यु का पता ही नहीं चला। उनकी देह का कंकाल ही मिला। ऐसी संभावना लगी कि वे अपने घर में गिरकर बेहोश हो गईं होंगी और शरीर की असमर्थता से किसी को भी अपना पीड़ा नहीं बता पाईं। मुम्बई जैसे महानगरों की संस्कृति के अनुसार पड़ोसी को पड़ोसी से कोई मतलब नहीं तो किसी को उनके न होने का पता ही नहीं चला। उनका एकमात्र बेटा पढ़कर विदेश जाकर किसी बड़ी कम्पनी में काम करने लगा था। विदेश की आलीशान जिन्दगी ने माँ की याद ही भुला दी। हर माँ की तरह आशाजी ने भी सोचा होगा कि मेरा बेटा मेरे बुढ़ापे का सहारा बनेगा और हर संकट में साथ खड़ा होगा। पर बेटा तो अपनी रंगीन दुनिया में इतना मदहोश था कि वह 3 माह में एकाध बार अपनी माँ से बात करता था और माँ बेटे के सुन्दर भविष्य की कामना में अपना भविष्य खराब कर बैठी।

2- दूसरी घटना कपड़े की विख्यात कम्पनी रेमण्ड के मालिक 78 वर्षीय विजयपत सिंघानिया की। विजयपत सिंघानिया ने अरबों रुपये की रेमण्ड कम्पनी के एकमात्र मालिक थे। उन्होंने देश के सबसे धनी व्यक्ति मुकेश अम्बानी के बिल्डिंग से ऊंची बिल्डिंग जे.के.हाऊस बनवाया और वे आज किराये के फ्लैट में रहने को मजबूर हैं। पुत्र मोह में उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति अपने बेटे गौतम सिंघानिया के नाम कर दी। पिता ने यही सोचा होगा कि मेरा बेटा मेरे व्यापार को संभाले और आगे बढ़ाये और बेटे ने अपने पिता को ही सम्पत्ति से बाहर कर दिया।

इन दोनों घटनाओं के लिये क्या उनके बच्चे ही दोषी हैं ? हर माता-पिता का एक ही डायलॉग है हम तो अपने बच्चों के लिये जी रहे हैं बस। ये सही रास्ते पर लग जायें बस यही इच्छा है। सच में इसका रहस्य यह है कि बच्चे धनवान हो जायेंगे तो माता-पिता बुढ़ापे में मौज करेंगे। आज हमारे सम्बन्ध सिमटकर अपने बेटे-बेटी तक ही रह गये हैं। वरना करोड़ों के फ्लैट्स की मालकिन इस तरह नहीं मरती। विजयपत के मरने के बाद सारी सम्पत्ति तो गौतम को ही मिलने वाली थी फिर ऐसी परिस्थिति क्यों बन गई ?

इस दुनिया में अकेलापन बहुत बड़ा भय है। फेस बुक और व्हाट्सएप के सहारे जीवन नहीं कट सकता। दिगम्बर मुनिराजों के लिये अकेलापन वरदान भी बन सकता है लेकिन संसारियों के लिये तो अभिशाप ही है।

इसलिये हर माता-पिता अपने संकुचित दायरे से बाहर निकलें और सामाजिक जीवन भी जियें वरना कल आपके पड़ोस में कोई आशा साहनी और विजयपत सिंघानिया मिलने में देर नहीं लगेगी....।

प्रेरक प्रसंग - अधूरे स्वप्न

सीता की अग्निपरीक्षा के बाद रामचन्द्रजी के परिवार के अधिकांश सदस्य संसार की दशा और वैराग्य का चिन्तन कर रहे थे परन्तु सीता का भाई भामण्डल राज्य के भोगों में ही मस्त हो गया था। उसने सोचा कि पहले मैं पुण्य से प्राप्त भोगों का आनन्द ले लूँ फिर धर्म की साधना करूँगा। किन्तु उसकी कामनायें पूरी नहीं हो सकीं। जब भामण्डल बरसात के मौसम में प्रकृति के सौन्दर्य में मस्त होकर खुशियाँ मना रहा था कि अचानक ही बिजली तड़ककर उसके ऊपर गिरी और वह तुरन्त ही भस्म हो गया। उसके सभी स्वप्न अधूरे रह गये। जबलौं न रोग गहे, तबलौं झटिति निज हित करो।

सेठ जी एक गिलास पानी मिलेगा क्या ?

अभी रुक जाओ, आदमी नहीं है। सेठजी बहुत जोर से प्यास लगी है, दे दीजिये ना, आपके तो बगल में पानी रखा है। तुझे बोला ना, अभी रुको, आदमी नहीं है। सेठजी गला सूख गया है, लगता है प्राण निकलने वाले हैं बड़ी मेहरबानी होगी यदि पानी मिल जाये तो..... तुझे कितनी बार बोला कि आदमी नहीं है, जब आदमी आयेगा तब पानी दे देगा। सेठजी बुरा न माने तो एक बात कहूँ..... थोड़ी देर के लिये आप ही आदमी बन जाईये ना। सेठ चुप होकर उस प्यासे व्यक्ति को देखता रह गया।

सन्मति वन

लेखिका – श्रीमती रुचि 'अनेकांत' नई दिल्ली

(सभी भाग जाते हैं मात्र शेर रह जाता है शिकारी दौड़ते हुये आता है)

शिकारी – हा – हा – हा अभी सुन रहा था कुछ, जानवरों की आवाज निराली (क्रोधपूर्वक) कहां भाग गये सब, अब आयी उनपर विपदा भारी। थोड़ी सी बाकी अब आस इच्छा हो रही है खाऊँ हिरनी माँस॥

शेर – (दहाड़कर अचानक) भाग जाओ यहां से ऐ दुष्ट प्राणी, नहीं मिल सकता तुझे बूँद भर भी पानी। मैं शेर हूँ इस जंगल का राजा, शिकार करोगे तो दूँगा सजा॥ अरे ..... सिर्फ जीभ के स्वाद के लिये क्यों मांस खाते हो, इन निर्दोष प्राणियों को अपना शिकार बनाते हो?

शिकारी – (खलनायकी स्वर में) देख मेरे सामने से हट जा मेरे हाथों में बंदूक है। तू बेमौत मारा जायेगा, मेरा निशाना अचूक है॥

शेर – तू भी सुन ले। जब तक इस देह में जान हैं उजाड़ नहीं सकता तू वन का दुश्मन है (दहाड़कर शिकारी के ऊपर कूदता है किंतु कमर से छुरा निकालकर शेर

की जांघों में एक दर्दनाक वार करता है शेर घायल हो जाता है और शिकारी बंदूक उठाकर भागते हुये कहता है।)

शिकारी – घबड़ाओ मत मैं अवश्य आउँगा जानवरों को मैं अवश्य खाउंगा

शेर – (चिल्लाकर) आह ––––– ऐ दुष्ट प्राणी तुझे क्या मिला –

बंदर – (चिल्लाकर) राजा जी ... राजाजी (साथ में)

हिरनी – अरे राजा जी की आवाज दौड़ो .... (सभी का प्रवेश)

खरगोश – अरे–अरे, देखो–देखो राजा जी को खून बह रहा है।

कोयल – लगता है उस दुष्ट मानव ने ही राजाजी को मारा है।

हिरनी – जल्दी करो राजाजी के घाव को बांध दो।

(थोड़ी देर बाद लोमड़ी का प्रवेश)

लोमड़ी – राजा जी की जय हो ....2 .....

शेर – (आह भरते हुये) कहो क्या बात है लोमड़ी ?

लोमड़ी – राजन एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती हे। एक कुत्ते ने अपराध किया है, महाराज न्याय चाहिये।

खरगोश – लेकिन राजाजी की हालत ठीक नहीं है। वे अस्वस्थ्य हैं।

शेर – नहीं खरगोश प्रजा के लिये मेरा दरबार हमेशा खुला है। दरबार लगाया जाये। (दरबार लगता है राजा जी सिंहासन पर बैठे हैं, कुत्ते को पेश किया जाता है।)

शेर – इसने क्या अपराध किया है ?

लोमड़ी – महाराज ! इसने घोर अपराध किया है। सन्मति वन की साशन को कलंकित किया है। महाराज ! इसने चोरों द्वारा दिये गये बिस्कुटों के लोच में आकर अपने मालिक के घर में चोरी करवा दी, इसे कठोर दंड मिलना चाहिये।

शेर – (कुत्ते से) – क्या यह सब सत्य है ?

कुत्ता – मुझे माफ कर दीजिये राजा जी –––– (गिड़गिड़ाते हुये)

शेर – (क्रोधपूर्वक) नहीं –। ऐ दुष्ट तूने ऐसा अपराध किया है जिससे सन्मति वन को ही नहीं बल्कि अपनी कुत्ता जाति को भी कलंकित किया है, तुझमें आदमी के गुण आ गये हैं, तुझे कुत्तों की बिरादरी से बाहर किया जाता है।

(सिपाही कुत्ते को ले जाते हैं) थोड़ी देर बाद ....

शेर – लोमड़ी !

लोमड़ी – जी, महाराज !

शेर – आज कहां गये है हाथी दादा, क्यों रहते वे अपनाकर जीवन सादा। उन बुजुर्ग से हमें सलाह लेनी हैं शिकारी की हरकतें उनसे कहनी है॥

लोमड़ी – लीजिये वे आ भी गये।

हाथी – (झुककर) राजा जी की जय हो।

राजा – आओ आओ हाथी दादा, तुम ज्ञानी हम सबसे ज्यादा। हम सभी को तुम राय बताओ, दुष्ट शिकारी का उपाय बताओ॥

हाथी – घटनायें मैंने भी सुनी हैं सारी, सन्मति वन पर आयी है विपदा भारी
राजा – क्या किया जाये अब बताओ, तुम सभी मिलकर एक तरकीब सुझाओ
बंदर – (क्रोध तथा आवेशपूर्ण स्वर में) हम उसे जिंदा नहीं छोड़ेंगे महाराज।
हाथी दादा – बेवकूफ न बनो बंदर, रहना सीखो सीमा के अंदर। हम सभी को थोड़ा इंतजार करना है, पहले सरलता से उसे समझाना है।
राजा – हाँ! यही ठीक रहेगा। कल सुबह हम सभी उससे एक साथ मिलेंगे। (सभी चले जाते हैं किंतु खरगोश पुनः लौट आता है)
खरगोश – आह!रात्री आ गयी है भूख भी छा गयी है। हरी हरी घासों को खा लूँ,ठंडा-ठंडा पानी पी लूँ। (घूमता है घास खाता है नाचता है कभी दुबक कर शिकारी आता है और उसे पकड लेता है।)
खरगोश – आह -2 बचाओ-2 (चिल्लाता है)
शिकारी – (खलनायकी स्वर में) ही ही ही ...... दूर रहकर सभी यहाँ पर, सो रहे हैं फिर आप चिल्लाकर क्यों रो रहे हैं ? ही ही ही..... कोई नहीं सुनेगा, अब तू मेरे हाथों ही मरेगा।
खरगोश – (रोते हुये) मुझे पर दया करो,मुझे छोड़ दो, मुझे तुम यह तो बताओ कि मुझे मारने से तुम्हें मिलेगा क्या ?
शिकारी – ही ही ही ....अरे तुम इतना नही जानते, लड़कियाँ जिस लिपिस्टिक को बड़े शौक से लगातीं हैं वह तुम्हारे ही खून से बनती है ।हा हा हा....
खरगोश – (चीखता है) क्या ? ....हे मनुष्य ! क्या तुम इतने गिर गये हो ? अरे क्या तुम्हें शर्म नही आती जब मेरा खून तुम्हारे ओठों पर मुस्कुराता है ?
शिकारी – बहुत बक-बक कर रहा हैं चुप रहा (किन्तु अचानक खरगोश छक कर भागता है,परन्तु शिकारी उसे घेर लेता है)
खरगोश – (रोते हुये) छोड़ दो मुझको छोड़ दो मुझको, दया करो कुछ रहम करो। जीनें दो मुझको जीनें दो मुझको न मुझ पर तुम ये जुल्म करो। (तभी शिकारी पकड़ लेता है और एक दर्दनाक वार चाकू से उसकी पीठ पर करता है और वह पुनः चिल्लाता है)
खरगोश – बचाओ! (और मर जाता है)
(तभी शेर वहाँ आ जाता है साथ में दो सिपाही कुत्ते भी)
शेर – (चीखकर) अरे..2..ऐ ! दुष्ट ! तूने क्या किया मेरे प्यारे भोले खरगोश को मार डाला। सिपाहियों पकड़ लो इसे।
(सभी आते हैं आर चिल्लाते हैं और शोक प्रक करते है)
(दुःख भरे स्वर में)सभी -खरगोश भाइया नहीं नहीं। ऐसा किसने किया? (रोते हैं)
शेर – अरे निर्दयी आज फैसला होकर रहेगा,सिपाहियों इसे मजबूती से पकड़े रहो।

बंदर – (क्रोधपूर्वक)इसके बारे में अब न सोचे महाराज, हाथ कटवा दें इसका तुरन्त अभी और आज। अब सहनशक्ति के बाहर है इस दुष्ट का आतंक,हम सब मिलकर मारें और कर दें इसका अंत। (सभी शिकारी पर टूट पड़ते हैं)

हाथी और शेर– न,न ,न ऐसा मत करो छोड़ दो इसे इसे सजा जरूर मिलेगी। (किन्तु भीड़ की आवाज के आगे इनकी आवाज दब जाती है और भीड़ की मार से बिलखता शिकारी चिल्लाता है ......)

शिकारी – मुझे छोड़ दो माफ कर दो ....।

लोमड़ी – तुम हमें सताओगे, तो यही फल पाओगे।

बंदर – मार खाओगे, तभी तुम्हें मालूम चलेगा कि दर्द कैसा होता है। (तभी शेर चिल्लाता है–)

शेर – रुक जाओ ! (सभी मारना छोड़ देते है और डर जाते हैं)

शेर – वो पाप करता है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम भी नीचता पर उतर आयें। छोड दो उसे शिकारी – मै.... मैं प्रायश्चित करूँगा महाराज...... (मंच पर घूम–घूम कर गाता है) हे प्रभु तू दया करके, मुझे माफ कर देना हे प्रभु मैं भटका हूँ, हिंसा के अंधेरे में हर तरफ दुःख ही है, इस कर्म के रेले में पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह बता देना अहिंसा की ही है विजय, क्षमा मुझे करना इतनी सी विनय तुमसे, मुझे माफ कर देना।

हाथी – प्रतिज्ञा करो कि तुम कभी अण्डा मांस नही खाओगे। निर्दोष जीवों को बेवजह नहीं सताओगे।

शिकारी – मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। अब मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा।

सभी – हाँ हाँ महाराज ! इसे माफ कर दीजिये इससे हम यही चाहते थे।

राजा – उठो,तुम्हे माफ करते हैं जाओ और बर्बरता पूर्ण राक्षसी जीवन छोड़कर शाकाहारी जीवन व्यतीत करो और जन्म लिया है तो उसे सार्थक करो।

सभी – राजा जी की जय हो ....जय हो ...... (पर्दा गिर जाता है)

भाव

सोनगढ़ के संत आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजी स्वामी अपनी आध्यात्मिक दृष्टि के लिये विख्यात थे। एक बार शाम को चर्चा की शुरुआत करते हुये बोले - मुझे एक प्रश्न पूछना है। लोग आश्चर्य में पड़ गये कि गुरुदेव न जाने क्या पूछेंगे ?

थोड़ी देर रुककर गुरुदेव ने पूछा - सोने का भाव क्या है? - सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि वैरागी व्यक्ति को सोने के भाव से क्या काम?

एक व्यक्ति बोला - आज अखबार में नहीं देखा।

दूसरा बोला - पता नहीं, सोना आज क्या भाव है ?

तीसरा भाई बोला - सोने का आज का भाव 129 रु. तोला (10 ग्राम) है। तब गुरुदेवश्री बोले - भाई! हमारे पूछने का मतलब सोने के रुपये वाले भाव से नहीं है। सोने का भाव तो सोने में ही रहता है। सोना तो पुद्गल है और इसका स्पर्श, रस, गंध, वर्ण ही इसका भाव है। ऐसे ही आत्मा का भाव ज्ञान-दर्शन ही उसका भाव है।

वस्तु को उसके स्वभाव द्वारा ही जानना चाहिये।

चिन्ता

गुरुदेवश्री एक बार चूड़ा गांव में प्रवचन कर रहे थे। सदा की भांति वे अपने प्रवचन में आत्मकल्याण करने की और भगवान बनने की प्रेरणा दे रहे थे। प्रवचन सभा में एक पुलिस वाला भी बैठा था। प्रवचन के बाद वह गुरुदेवश्री के पास आकर बोला कि साहिब! सब लोग आपके बताये मार्ग पर चलेंगे और भगवान बन जायेंगे तो संसार का काम कौन करेगा ? गुरुदेवश्री बोले - करोड़पति बनने की इच्छा वाला ये नहीं सोचता कि यदि मैं करोड़पति बन गया तो बर्तन कौन साफ करेगा ?

सोच

पापा! जल्दी से एक हजार रुपये दे दीजिये.. अरे मेरे बेटे! एक हजार रुपये क्या... दो हजार रुपये ले लो... मगर ये तो बताओ कि तुम एक हजार रुपये लेकर क्या करोगे ?

अरे पापा! आपको इतना भी नहीं पता कि दीपावली आ रही है। मैं भैया के साथ बाजार जा रहा हूँ। ढ़ेर सारे पटाखे लेकर आऊँगा। अरे वाह! ढ़ेर सारे पटाखे लाओगे। अच्छा ! ये बताओ कि पटाखे लेकर क्या करोगे ?

पापा..! ये भी कोई पूछने की बात है। दीवाली के दिन पटाखे फोड़ूँगा, फुलझड़ी जलाऊँगा बहुत मजा आयेगा। अच्छा! आप ये चाहते हो कि पटाखे चलाओ और आपके कारण दूसरे दुःखी हों और कोई मर जाये..

नहीं पापा..। भला मैं ऐसा क्यों चाहूँगा..? मैं तो किसी को कभी दुःखी भी नहीं करता। लेकिन आप तो ऐसा ही करना चाहते हो.. वो कैसे ......? पटाखे फोड़कर ...

लेकिन पापा! ये तो खुशी का पर्व है और पूरा देश यह पर्व ऐसे ही मनाता है। ये तो हमारी खुशी मनाने का तरीका है। यदि आपके खुशी मनाने के तरीके से देश का, समाज का, धर्म का और जीवों का नुकसान हो तो ऐसी खुशी नहीं मनाना चाहिये ना..?

बिल्कुल सही। लेकिन आप तो ऐसा ही करना चाहते हैं..

पापा! मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है। आप अच्छे से बताईये ना।

बेटा! पटाखे फोड़ने से कोई फायदा नहीं दिखता, सिवाय बरबादी के। पटाखे चलाने से वायु और पानी में प्रदूषण, कचरा, आग लगने से अरबों की सम्पत्ति का नुकसान, यदि पटाखे से तुम जल जाओगे तो पूरा परिवार परेशान, न जाने कितने जीवों की हत्या, बेचारे निर्दोष प्राणियों की आंखों में जलन, डर, परेशानी का कारण है पटाखे। हमारे देश के अरबों रुपये की बरबादी और लाभ कुछ नहीं। बीमार व्यक्ति और बूढ़े व्यक्तियों को परेशानी और भी न जाने कितनी हानियाँ हैं इनसे..।

बात आपकी सही है पापा! तो हम पर्व कैसे मनायें ? ये तो आनन्द का पर्व है ना... आनन्द मनाने के और भी कई तरीके हैं। आप मंदिर जाओ, पूजन करो, साधर्मियों की सहायता करो, घूमने जाओ, गरीबों को दान दो, पाठशाला में कुछ गिफ्ट बांटो। क्या अहिंसा के पर्व को हिंसा से मनाना जरूरी है....

ठीक है पापा। मैं संकल्प लेता हूँ, मैं कभी पटाखे नहीं चलाऊँगा और इस महान पर्व को अहिंसक तरीके से मनाऊँगा।

वाह मेरे जीनियस बेटा! ये लो २००० रु. और मनाओ यह पर्व।

रोग और दवा

राजकुमार अत्यंत सुन्दर थे। उनके अतिशय सुन्दर रूप को देखकर हर कोई मुग्ध हो जाता था। इतने विशाल साम्राज्य और भोग की सारी सुविधा होने पर भी उन्हें संसार से वैराग्य हो गया और उन्होंने दिगम्बर जिन मुनि दीक्षा अंगीकार कर ली। मुनि अवस्था में उनके शरीर में भयंकर कोढ़ हो गया, परन्तु वे शरीर की ओर ध्यान न देकर अपनी आत्मसाधना में लीन रहे।

देव लोक में उनके राजकुमार अवस्था वाले अतिशय रूप की चर्चा हुई और एक देव वैद्य का रूप धारणकर आया और कहा - प्रभो! आपकी आज्ञा हो तो मेरी दवा से आपका यह रोग एक क्षण में ही मिट सकता है।

मुनिराज बोले - हे वत्स! इस शरीर का कोढ़ रोग मिट जाये - ऐसी ऋद्धि ताकत तो मेरे थूक में ही है, परन्तु जो शरीर मेरा है ही नहीं, उसके इलाज की चिन्ता मैं क्यों करूँ ? मुझे तो बस अपने आत्मकल्याण का विकल्प है, मुझे भवरोग से मुक्त होना है। क्या तुम्हारे पास भवरोग की कोई दवा है ?

तब देव ने कहा - हे प्रभु! इस भव रोग को मिटाने की दवा तो आपके पास ही है। आपके पास रत्नत्रय की महाऔषधि है। आपके निमित्त से हम सबको भी आत्मकल्याण की प्रेरणा मिलेगी।

इस लघु कथा के माध्यम से ज्ञानी कहते हैं कि - हे जीव! तू देह की चिन्ता मत कर क्योंकि देह की चिन्ता करने से कोई परिवर्तन नहीं होने वाला, देह अपने परिणमन के लिये स्वाधीन है। हमें ये मनुष्य पर्याय भवरोग को दूर करने के लिये मिली है। संसार के वैज्ञानिकों ने टी.बी., कैंसर आदि की दवा की खोज की परन्तु जन्म-मरण के रोग को दूर करने वाली दवा उनके पास नहीं है। उस भव रोग को मिटाने की दवा जिनेन्द्र परमात्मा के पास है। उस दवा का नाम है - रत्नत्रय अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र। हम सबको इसी दवा का सेवन करना चाहिये।

मूल्यवान कौन ?

राजसभा में राजा ने दो घड़े दिखाये। उनमें से एक घड़ा सोने का था और दूसरा मिट्टी का। राजा ने पूछा- इनमें से ज्यादा मूल्यवान घड़ा कौनसा है ? सभा के सदस्यों ने सोने के घड़े को मूल्यवान बताया परन्तु श्रेष्ठी धर्मदास चुप बैठे थे। राजा ने पूछा - धर्मदासजी! क्या आपकी दृष्टि में भी सोने का घड़ा मूल्यवान है? श्रेष्ठी बोले - नहीं राजन्! मेरी दृष्टि में तो मिट्टी का घड़ा ही मूल्यवान है। राजा के कारण पूछने पर श्रेष्ठी ने बताया - राजन्! यदि दोनों घड़ों में पानी भरा जाये तो मिट्टी के घड़े का पानी मीठा और शीतल होगा, सोने के घड़े का नहीं। मूल्य वस्तु से नहीं उसकी उपयोगिता से होता है। गाय के लिये सोना-चांदी नहीं बल्कि हरी घास मूल्यवान है।
श्रेष्ठी के तर्कपूर्ण उत्तर से राजा बहुत प्रसन्न हुये।

आपके प्रश्न - आगम के उत्तर

प्रश्न- 1. क्या कोई आचार्य दीक्षा देते समय आर्यिका के केशलोंच अपने हाथ से कर सकते हैं ?

उत्तर - आगम में आर्यिका को मुनिराज से 7 हाथ दूर रहने का आदेश है इसलिये आचार्य आर्यिका का केशलोंच नहीं कर सकते। आर्यिका ही आर्यिका को दीक्षा देती हैं और दीक्षा लेने वाली आर्यिका स्वयं अपने केशलोंच करती हैं।

प्रश्न- 2. स्त्री सातवें नरक में क्यों नहीं जा सकती ?

उत्तर - सातवें नरक में जाने के लिये वज्रवृषभ नाराच संहनन स्त्री के नहीं होता।

प्रश्न- 3. हिन्दू रामायण में राम ने रावण को मारा और जैन रामायण में लक्ष्मण ने रावण को मारा - यह अन्तर क्यों ?

उत्तर - जैन धर्म के सिद्धांत अनुसार नारायण ही प्रतिनारायण को मारता है। लक्ष्मण नारायण थे और रावण प्रतिनारायण।

प्रश्न- 4. अहिंसक जैनी बीमारी होने पर दवाईयाँ खाकर शरीर के कीटाणु को मारते हैं क्या यह हिंसा नहीं है ?

उत्तर - प्रमाद पूर्वक मारने के विचार से जीवों को मारने से हिंसा का दोष लगता है। इसे संकल्पी हिंसा कहते हैं। इस संकल्पी हिंसा को श्रावक का त्याग होता है।

प्रश्न- 5. घर में जिनमंदिर स्थापित करना क्या उचित है ?

उत्तर - घर में राग-द्वेष का वातावरण होता है और साथ ही घर पवित्र स्थान भी न होने से जिनेन्द्र भगवान की विराधना का दोष लगता है। जिनमंदिर वीतरागता का स्थान है। जब मुनिराज किसी के घर में नहीं ठहर सकते तो प्रतिमा घर में कैसे रख सकते हैं ?

प्रश्न- 6. पूजन के आठ द्रव्यों में किशमिश या छुहारा खजूर ले सकते हैं क्या ?

उत्तर - किशमिश और छुहारा में मिठास होने के कारण उनमें जीव राशि होने की संभावना होती है इसलिये पूजन में इनका उपयोग नहीं करना चाहिये। जिनेन्द्र पूजन में सूखे प्रासुक द्रव्य ही चढ़ाये जाते हैं।

प्रश्न- 7. क्या जिनमंदिर में जैन धर्म के अलावा दूसरे पुराण पढ़ सकते हैं ?

उत्तर - नहीं। क्योंकि वे सब विकथा में शामिल हैं और विकथा पढ़ने से पाप बन्ध ही होता है। यहाँ तक कि जिनमंदिर में मोबाइल का प्रयोग भी नहीं करना चाहिये। इससे भारी पाप बंध होता है। यदि मोबाइल ले जाने की मजबूरी हो तो उसे मंदिर के समय तक बंद या सायलेण्ट मोड में रखना चाहिये।

चहकती चेतना के सदस्य ध्यान दें

चहकती चेतना के सदस्य क्रमांक 2107 से 2404 तक की सदस्यता समाप्त हो गई है तथा सदस्यता क्रमांक 2405 से 2500 तक के सदस्यों की सदस्यता अवधि शीघ्र ही समाप्त होने वाली है। अतः सभी सदस्यों से निवेदन है कि आप सदस्यता राशि शीघ्र जमा कराने का कष्ट करें। शुल्क प्राप्त न होने पर पत्रिका भेजना संभव नहीं होगा।

सदस्यता शुल्क आप चैक/ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्न विवरण अनुसार पत्रिका के खाते में जमा करके हमें सूचित करें और अपना पूरा पता हमें 9300642434 पर व्हाट्सएप या SMS द्वारा भेजें।

Ac Name - CHEHAKTI CHETNA

Bank : Punjab National Bank   Branch : Fawwara Chowk, Jabalpur
Saving Ac : 193700100030106   IFSC : PUNB0193700

सहयोग प्राप्त - 1100/- श्रीमति हंसा विजयजी पामेचा जबलपुर की ओर से चहकती चेतना में प्राप्त।

हमारे नये स्थायी सदस्य

इस योजना के अन्तर्गत 5000/- रु. में आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर की स्थायी सदस्यता प्रदान की जाती है। स्थायी सदस्य को आगामी 15 वर्ष तक चहकती चेतना पत्रिका और संस्था द्वारा तैयार किये जाने साहित्य एवं सीडी आदि सामग्री भेजी जायेगी।

1. श्री विवेक विमल वारिया, जामनगर गुज.
2. श्री प्रशील आशीष मेहता, जामनगर गुज.
3. कु. स्तुति अरविन्द जैन, बण्डा जि. सागर म.प्र.

प्रकाशन हेतु सामग्री आमंत्रित

चहकती चेतना पत्रिका में आपको जैनधर्म के आधारभूत सिद्धान्तों के साथ जैन दर्शन का गौरव बढ़ाने वाली सामग्री मिलती रहे - हम इसका निरन्तर प्रयास करते हैं। इस सम्बन्ध में आपके लेख, धार्मिक कवितायें, पहेलियाँ, ऐतिहासिक प्रामाणिक तथ्य आदि सामग्री आमंत्रित हैं। आप यह सामग्री मेल/व्हाट्सएप अथवा पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। पत्रिका में प्रकाशन के योग्य पाये जाने पर हम पत्रिका में इसका प्रकाशन अवश्य करेंगे।

- संपादक

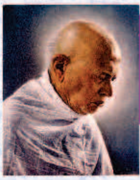

गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनने के लिये निःशुल्क प्रोजेक्टर/लेपटॉप वितरण योजना का मंगल शुभारम्भ

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी की भवतापहारी वाणी आज लगभग 9000 प्रवचनों के रूप में सुरक्षित है। सम्पूर्ण भारत के मुमुक्षु साधर्मी गुरुदेवश्री की वाणी का आधुनिक तकनीक के माध्यम से नियमित लाभ लें - इस भावना से श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला, मुम्बई के द्वारा एक योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजहना के अन्तर्गत मुमुक्षु मण्डलों को उनके आवेदन पर संस्था की ओर से सर्वेक्षण के पश्चात् प्रोजेक्टर/स्क्रीन और लेपटॉप निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है। इस क्रम में अभी तक सीमंधर जिनालय-शिवपुरी, वासुपूज्य जिनालय-शिवपुरी, वर्द्धमान जिनालय-गुना, राघौगढ़, जबेरा जि. दमोह, नेमिनगर-इंदौर, विजय नगर-इंदौर, आरोन, बिजौलिया, अशोनगर, विजय नगर-अजमेर, काटोल-नागपुर, फालका बाजार-ग्वालियर, सन्मति संस्कार संस्थान-कोटा, लाला का बाजार-ग्वालियर, भायन्दर-मुम्बई के मुमुक्षु मण्डलों यह सामग्री प्रदान की गई है।

देश को कोई भी मुमुक्षु मण्डल पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन संचालित करने के लिये हमसे प्रोजेक्टर आदि प्राप्त करना चाहता है तो वे हमसे (विराग शास्त्री-9300642434) संपर्क कर सकते हैं।

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई की अनूठी पहल

वीतरागी तत्वज्ञान में समर्पित संस्था श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारता, मुम्बई वीतरागी तत्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये निःस्वार्थ भाव से विगत लगभग 25 वर्षों से निरन्तर सत्साहित्य प्रकाशन, गुरुदेवश्री के प्रवचन आडियो-वीडियो निर्माण आदि के अनेक कार्य कर रहा है। इसी क्रम में संस्था ने पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के आडियो-वीडियो प्रवचन का लाभ हर साधर्मी को हो- इस भावना से एक योजना बनाई है। इसके अन्तर्गत यदि किसी भी मुमुक्षु मण्डल/संस्था या साधर्मी को पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनने में किसी भी प्रकार की समस्या हो तो हम उसका यथासंभव समाधान करने के लिये प्रस्तुत हैं। आप हमसे संपर्क करें। आपकी भावना अनुसार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित एवं उपलब्ध साहित्य, आडियो-वीडियो सीडी, फोटो आदि उपलब्ध कराई जायेगी । साथ ही किसी भी तकनीकी समस्या में आपको सहयोग भी किया जायेगा। **आप हमसे निःसंकोच ट्रस्ट कार्यालय में 022-26130820, 022-65290861 , 9300642434 पर संपर्क करें।**

आश्चर्य किन्तु सत्य

झारखण्ड के चतरा जिले के इटखोरी गांव में हिन्दू समाज का भद्रकाली माता का मंदिर है। यह झारखण्ड की राजधानी रांची से 150 किमी की दूरी पर है। इस मंदिर में एक गोल शिला है। इस शिला को लोग बुद्ध,महादेव आदि अनेक नाम से पुकारते हैं। इस शिला को ध्यान से देखने पर इसमें सैकड़ों जैन तीर्थंकरों की प्रतिमायें उत्कीर्ण दिखाई देतीं हैं।

ध्यान से देखिये ...

परिणामों का फल

हार्दिक आमंत्रण अवश्य पधारिये राजस्थान की धरती पर

झालरापाटन की धरती पर 125 वर्षों के बाद आयोजित

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

मंगलवार, 14 नवम्बर 2017 से रविवार, 19 नवम्बर 2017 तक

स्थान : एस.टी.सी. ग्राउण्ड (पिपली बाजार), झालरापाटन (राज.)

* नवीन जिनमंदिर की भव्य प्रतिष्ठा * आत्मा से परमात्मा बनने की विधि का प्रत्यक्ष दर्शन * देश के उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचनों का लाभ * इन्द्र सभा - राज सभा के अनुपम दृश्यों के माध्यम तत्वलाभ * जन्मकल्याणक के प्रसंग पर भव्य पालना झूलन * विश्व प्रसिद्ध पन्नालाल ऐलक सरस्वती भवन के दर्शन * क्षुल्लक धर्मदासजी की पावन भूमि * मात्र 40 किमी दूरी पर अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी के दर्शन * राजा पाड़ाशाह द्वारा निर्मित 1000 वर्ष प्राचीन 151 फुट उत्तंग शिखरयुक्त श्री शांतिनाथ जिनालय के पवित्र दर्शन का लाभ

प्रतिष्ठाचार्य : विख्यात विद्वान बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, दिल्ली

निर्देशक - रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, कार्याध्यक्ष - दिलीप सेठी

स्वागताध्यक्ष - सुरेन्द्र जी कोटा मंत्री - शैलेन्द्र चांदवाड़ कोटा

निवेदक : अध्यक्ष : प्रेमचन्द जैन, कोटा महामंत्री : विजय बड़जात्या, इन्दौर

संयोजक : नागेश जैन, पिड़ावा * रतन शास्त्री, कोटा * अमित अरिहंत, मंडावरा

संपर्क : 9414687131, 7976023452, 8442074031

विनीत : श्री कुन्दकुन्द -कहान तत्त्व प्रचारक समिति, झालरापाटन जि. झालावाड़ राज.

नोट : झालरापाटन नगर कोटा से 90 किमी, भवानी मण्डी से 40 किमी, की दूरी पर दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग पर है। साथ ही इंदौर एवं भोपाल से झालरापाटन के लिये बस सेवा भी उपलब्ध है।

आपका साथ हमारा प्रयास - हो जिनधर्म का शंखनाद

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर

आपकी यह संस्था विगत लगभग 16 वर्षों से बाल-युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रवाहित करने का प्रयास कर रही है। इस क्रम में तत्वप्रचार की नवीनतम विधा का प्रयोग करते हुये जिनधर्म की कविताओं, कहानियों, गीतों के वीडियो का निर्माण किया गया। साथ ही रोचक धार्मिक गेम, कविताओं-कहानियों की चित्र सहित पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। बाल वर्ग में निरन्तर धर्म की जानकानियाँ प्रवाहित करने हेतु 2006 से चहकती चेतना पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका को पाठकों एवं अनेक विद्वानों का भरपूर प्यार और विश्वास प्राप्त हुआ है ।

संस्था के पास जिनधर्म के प्रचार की अनेक योजनायें हैं आपका सहयोग मिलता रहेगा तो हम आगे भी समाज के लिये यह कार्य निरन्तर करते रहेंगे। आशा है आपका सहयोग और विश्वास प्राप्त होगा। आप निम्न प्रकार से हमारा सहयोग कर सकते हैं ।

शिरोमणि परम संरक्षक - 1 लाख रुपये । परम संरक्षक - 51 हजार रुपये ।
संरक्षक - 31 हजार रुपये । परम सहायक - 21 हजार रुपये । सहायक - 11 हजार रुपये ।
सहायक सदस्य - 5 हजार रुपये । सदस्य - 1000/- हजार रुपये ।

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101026079, IFSC - PUNB0193700

श्री आदिनाथ
दिगम्बर जिनबिम्ब
पंच कल्याणक
प्रतिष्ठा महोत्सव

२ दिसम्बर २०१७ से ७ दिसम्बर २०१७

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम
उदयपुर

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट, उदयपुर

संपर्क सूत्र

अजित जैन, बड़ौदा
98243 98999

राजकुमार शास्त्री, उदयपुर
94141 03492

नरेन्द्रकुमार दलावत, उदयपुर
98280 73907